21/2/22 डा० नीरजा उराँव
एसोसिएट प्रोफेसर
विषय- मनोविज्ञान
स्नातक भाग II

6. सीमाएँ तथा त्रुटियाँ (Limitation and weaknesses)- प्रतिवेदन में इस बात का भी उल्लेख किया जाता है कि प्रस्तुत शोध की कौन-2 सीमायें या त्रुटियाँ हैं। इस बात से पाठकों को अध्ययन के संबंध में निर्णय करने में सुविधा होती है तथा आगे शोध करने वाले को उन त्रुटियों से बचने का अवसर मिलता है। सांख्यिकीय विधि से संबंधित त्रुटियाँ उत्पन्न होती हैं। जैसे-ऊपर के उदाहरण में त्रुटियों के संबंध में लिखा जाता है कि प्रतिदर्श का आकार छोटा होना था (रब) केवल एक विशेष स्कूल से ही का चयन किया गया था।

7 सार्थकता तथा सुझाव (Significance and suggestion) शोध में कुछ त्रुटि के बावजूद जो सार्थकता होती है उसका उल्लेख किया जाता है क्योंकि उसके आशय (implications) के आधार पर आगे शोध के लिए सुझाव दिये जाते हैं जैसे ऊपर के उदाहरण को ध्यान में रखते हुए कहा जा सकता है कि कुछ त्रुटियों या सीमाओं के बावजूद यह शोध बच्चों के विकास के लिए सार्थक रहता है।

8. सन्दर्भ ग्रन्थ (References) — प्रतिवेदन के अन्त में उन ग्रन्थों तथा पत्रिकाओं की सूची प्रस्तुत की जाती है जिनकी सहायता शोध को पूरा करने में ली गयी थी। जैसे प्रस्तुत उदाहरण से संबंधित शोध में जिन ग्रन्थों तथा पत्रिकाओं की सहायता ली गयी थी उनकी सूचि दी जाएगी। प्रतिवेदन के आवरण को भी आकर्षण बनाने का प्रयास किया जाता है।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि शोध प्रतिवेदन को तैयार करने, प्रस्तुत करने या लिखने में उपर्युक्त कई अवस्थायें शामिल होती हैं। यह बात उल्लेखनीय है कि प्रतिवेदन की सरल, भाषा स्पष्ट तथा संक्षिप्त हो ताकि पाठकों Readers। शोध के विभिन्न पक्षों को समझने में सुविधा है।